

महिला सशक्तिकरण में दूरस्थ शिक्षा की भूमिका : एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

मेघा अग्रवाल *, प्रो० डी.एस. बिष्ट**

सारांश

वर्तमान परिदृश्य में जहाँ शिक्षा ने महिलाओं को उनके अस्तित्व का बोध कराया है वहीं दूसरी ओर उनके कार्यों एवं भूमिकाओं में भी परिवर्तन किया है जिससे उनमें सामाजिक गतिशीलता दृष्टिगत हो रही है। आर्थिक उत्थान के लिए सबसे पहली आवश्यकता है कि नारी जगत में शिक्षा का संवर्धन हो क्योंकि शिक्षा जीवन के सभी क्षेत्रों के विकास की अधिष्ठात्री है। शिक्षा के प्रचार प्रसार के बिना नारी को सशक्त करने के सभी उपक्रम निरर्थक सिद्ध होंगे। समुचित शिक्षा व्यवस्था के द्वारा जब जनजागरुकता होगी तभी आर्थिक स्वावलम्बन के द्वारा स्त्रियों का जीवन स्तर उठेगा। अतः शिक्षा की अनिवार्यता इसलिए भी है कि महिलाओं में जागरुकता व आर्थिक स्वावलम्बन का भाव जाग सके। अतः प्रस्तुत अध्ययन के माध्यम से मुक्त विश्वविद्यालय से प्राप्त शिक्षा के पश्चात महिलाओं में आये परिवर्तन व जागरुकता का मूल्यांकन सशक्तिकरण के आधार पर किया गया है।

संकेत शब्द :- महिला सशक्तिकरण, दूरस्थ शिक्षा, जागरुकता, परिवर्तन एवं भूमिका

प्रस्तावना

शिक्षा वर्तमान शताब्दी की वह सबसे महत्वपूर्ण प्रक्रिया है, जो व्यक्ति और समाज के जीवन को विविध रूपों से प्रभावित करती है। शिक्षा और समाज में गहरा सम्बन्ध है। एक ओर शिक्षा परम्परागत धरोहर को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुँचाती है और इस तरह संस्कृति की निरन्तरता बनाये रखने में सहायक होती है, दूसरी ओर पारिस्थितिक परिवर्तन उसे अनुकूलन का साधन बनाने में सहायक होते हैं। इस परिप्रेक्ष्य में शिक्षा, परिवर्तन तथा गतिशीलता का माध्यम बनती है।¹

समाज के प्रत्येक व्यक्ति और हर एक वर्ग के लिए शिक्षा आवश्यक है लेकिन महिलाओं के लिए इसका महत्व अधिक है। शिक्षा एक ऐसा सशक्त उपकरण है जो नई सामाजिक व्यवस्था का सृजन करने के लिए महिलाओं को सक्षम बनाता है। शिक्षा महिलाओं की सभी क्षेत्रों में प्रगति का एकमात्र आधार व साधन है। बिना शिक्षा के महिलाओं की प्रगति सम्भव नहीं है। महिलाएँ किसी भी समाज का महत्वपूर्ण भाग होती हैं। कोई भी समाज महिलाओं की प्रगति के बिना अपना विकास नहीं कर सकता है और महिलाओं की प्रगति शिक्षा के बिना सम्भव नहीं है।

शिक्षा सिर्फ पुरुषों के लिए ही नहीं बल्कि महिलाओं के लिए भी बहुत महत्वपूर्ण है, क्योंकि शिक्षा ग्रहण करके ही व्यक्ति समाज का जिम्मेदार सदस्य बनता है। वर्तमान में भारतीय महिलाओं में सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, राजनैतिक व धार्मिक सभी क्षेत्रों में परिवर्तन दिखाई दे रहा है और इन सब क्षेत्रों में परिवर्तन के लिए शिक्षा महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है।

मानव संसाधन विकास हेतु शैक्षिक विकास के प्रयासों में स्वतन्त्रता पूर्व जहाँ महिला शिक्षा को मात्र साक्षरता, कौशल, विकास के रूप में देखा गया, वहीं स्वतंत्रता के पश्चात् सर्वप्रथम विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग (1948-49) की स्थापना के साथ उच्च शिक्षा के महत्व को स्वीकार करते हुए स्पष्ट किया गया कि स्त्री शिक्षा के बिना लोग शिक्षित नहीं हो सकते। यदि शिक्षा को पुरुषों अथवा स्त्रियों के लिए सीमित करना है तो यह अवसर स्त्रियों को दिया जाए क्योंकि उनके द्वारा भावी संतान को शिक्षा दी जाएगी। इसी क्रम में वर्ष 1964-66 में गठित कोठारी आयोग ने इस तथ्य को आवश्यक समझा कि स्त्री शिक्षा को बड़ा कार्यक्रम माना जाना चाहिए। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) में महिला शिक्षा पर विशेष ध्यान देते हुए कहा गया है कि स्त्री-पुरुषों की शिक्षा में भेद नहीं किया जाएगा व लिंग मूलक अन्तर को समाप्त किया जाएगा। महिलाओं की शिक्षा के विकास हेतु प्रारम्भ से ही प्रयत्न किये जाएंगे एवं महिलाओं को विज्ञान एवं तकनीकी शिक्षा प्राप्त करने के लिए प्रोत्साहित किया जाएगा। महिलाओं को व्यावसायिक व तकनीकी शिक्षा प्राप्त करने के लिए विशेष सुविधाएँ दी जाएंगी। इसी क्रम में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, नई दिल्ली ने विश्वविद्यालय को लैंगिक समानता, महिलाओं को स्वावलम्बी बनाने, बालिका शिक्षा व जनसंख्या के पहलुओं के प्रति संवेदनशील होने के प्रति जागरुक होने आदि पहलुओं को शिक्षा पाठ्यक्रमों एवं योजनाओं में सम्मिलित किये जाने का प्रावधान सुनिश्चित किया। साथ ही सामाजिक तथा शैक्षिक विकास के महत्वपूर्ण साधन के रूप में अध्ययन कार्यक्रमों को बढ़ावा देने के प्रावधान भी सुनिश्चित किए गये हैं।²

यदि देखा जाय तो 2001 की जनगणना के अनुसार लगभग 1 अरब से भी अधिक जनसंख्या में 65.38 प्रतिशत

* शोधार्थी, समाजशास्त्र विभाग, डी.एस.बी. परिसर, कुमाऊँ विश्वविद्यालय, नैनीताल (उत्तराखण्ड)

** आचार्य, समाजशास्त्र विभाग, डी.एस.बी. परिसर, कुमाऊँ विश्वविद्यालय, नैनीताल (उत्तराखण्ड)

सम्पूर्ण साक्षरता के अर्न्तगत महिलाओं का साक्षरता प्रतिशत 54.16 प्रतिशत था,³ जबकि वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार लगभग 1.25 अरब की जनसंख्या में 74.04 प्रतिशत सम्पूर्ण साक्षरता के अर्न्तगत महिलाओं की साक्षरता 65.46 प्रतिशत है।⁴ बावजूद इसके शैक्षिक स्तरों में लैंगिक असमानता आज भी विद्यमान है, परन्तु स्त्रियों की स्वयं की साक्षरता दर व शैक्षिक स्तर में हुई प्रगति को उत्साहजनक माना जा सकता है। इन सभी शैक्षिक उपलब्धियों ने निश्चय ही एक वर्ग के रूप में महिला को सशक्त किया है। आज भारत में महिलाएँ लगभग सभी क्षेत्रों में जैसे— शिक्षा, राजनीति, मीडिया, कला और संस्कृति, नौकरी, विज्ञान—प्रौद्योगिकी आदि में पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चल रही हैं।⁵

महिला सशक्तीकरण का तात्पर्य महिलाओं को उनकी क्षमता एवं स्वतंत्रता का एहसास कराते हुए उन्हें इतना सशक्त बनाना है कि वे अपने व्यक्तिगत, सामाजिक, पारिवारिक एवं आर्थिक हितों से जुड़े निर्णय लेने की प्रक्रिया में भागीदार बन सकें। समाज के प्रत्येक क्षेत्र में भागीदारी सुनिश्चित कर सकें। उनका स्वयं के प्रति एवं समाज का उनके प्रति व उनकी सामाजिक भूमिका के प्रति दृष्टिकोण व्यापक हो सके। अतः महिला को सशक्ति सम्पन्न बनाना, सत्ता, प्रतिष्ठानों एवं जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में महिलाओं की सुनिश्चित समान भागीदारी, निर्णय लेने की क्षमता आदि को सशक्तिकरण के बड़े मानक के रूप में देखा जा सकता है और महिलाओं को पुरुष के बराबर वैधानिक, राजनैतिक, शारीरिक, मानसिक, सामाजिक एवं आर्थिक क्षेत्रों में स्वतंत्र निर्णायक की भूमिका का निर्वहन सशक्तिकरण का उद्देश्य है।

महिला सशक्तिकरण का सबसे व्यापक तत्व उन्हें समाजिक पद, प्रतिष्ठा और न्याय प्रदान करना है जबकि शिक्षा सामाजिक समानता बेहतर स्वास्थ्य, आर्थिक एवं वित्तीय सुदृढ़ता तथा राजनीतिक सहभागिता इसके प्रमुख लक्षण हैं। महिला सशक्तिकरण की प्रक्रिया में शामिल प्रमुख सात आयाम हैं, जो निम्नवत् हैं—

1. संकोच रहित होना,
2. आत्मविश्वास से बात करना व कार्य करना,
3. स्वयं की ईमानदारी से देखभाल करना,
4. अपनी सामर्थ्य व सीमाओं को जानना व स्वीकार करना,
5. अपनी बाधाओं को तोड़ना व आगे जाना,
6. अपनी इच्छाओं को जानना व उनको अपने लक्ष्य में शामिल करना,
7. अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने हेतु दृढ़ इच्छाशक्ति का विकास करना।⁶

दूरस्थ शिक्षा मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा के व्यापक दर्शन की पृष्ठभूमि पर उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय की स्थापना वर्ष 2005 में उत्तराखण्ड शासन के अधिनियम संख्या 23 द्वारा इस उद्देश्य से की गई कि समग्र ज्ञान और कला कौशल की स्वयं सीख पाने की विविध विधाओं द्वारा सक्षमता लोगों तक पहुँचायी जा सके। उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय अपने अनेक नूतन, समसामयिक एवं उपयोगी शैक्षणिक कार्यक्रमों को सम्प्रेषण के नवीनतम प्रयोगों तथा सम्पर्क—सत्रों द्वारा अधिक सुदृढ़ बनाता रहा है। विश्वविद्यालय का मुख्य उद्देश्य इस राज्य के त्वरित विकास एवं उन्नयन हेतु प्रशिक्षित एवं विभिन्न कौशलों में दक्ष उपयोगी मानव संसाधनों का विकास करना है। इस विश्वविद्यालय का उद्देश्य रहा है कि शिक्षा की गुणवत्ता में कभी किसी भी स्तर पर कोई समझौता न किया जाए। व्यावसायिक एवं तकनीकी शिक्षा में तीव्रता से हो रहे बदलावों को ध्यान में रखते हुए विश्वविद्यालय ने अपने पाठ्यक्रमों को इस प्रकार पुनर्गठित किया है कि रोजगार एवं स्वरोजगार के नित नये द्वार खुल सकें। विश्वविद्यालय मुख्य रूप से महिलाओं, जनजातियों तथा मुख्य धारा से अलग वर्गों के शैक्षिक उन्नयन हेतु कटिबद्ध है। विश्वविद्यालय ने 8 क्षेत्रीय केन्द्र क्रमशः देहरादून, हल्द्वानी, रुड़की, पौड़ी, उत्तरकाशी, रानीखेत, पिथौरागढ़ और बागेश्वर में स्थापित किये हैं। इनके अधीन अध्ययन केन्द्रों के माध्यम से शैक्षिक पाठ्यक्रमों का संचालन किया जा रहा है।

उपरोक्त सभी बातें सभी संभव हो सकती हैं जब महिलाएँ शिक्षित होंगी और ऐसे समय में मुक्त विश्वविद्यालय का महत्वपूर्ण योगदान वर्तमान में परिलक्षित होता दिखायी पड़ रहा है। महिलाओं की शिक्षा के प्रति समाज का नजरिया बदला है। महिलाओं के आत्मसम्मान में वृद्धि हो रही है, उनमें निर्णायक क्षमता को देखा जा रहा है। पुरुष व महिला के मध्य समाज द्वारा निर्मित भेद में कमी आ रही है, स्वास्थ्य के प्रति जागरूक संवेदनशील मुद्दों का प्रतिपादन भी उसके द्वारा किया जा रहा है। विगत वर्षों में उच्च शिक्षा से संबंधित संस्थाएँ विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, नई दिल्ली एवं राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद, नई दिल्ली के दिशा निर्देशों में जैण्डर फ्रैण्डली इनवायरमेंट पर बल दिया गया है और पाठ्यक्रमों में जैण्डर स्टडीज को स्थान मिल रहा है।

साहित्य समीक्षा

जयश्री भट्ट (1998) ने “महिला सशक्तिकरण” नामक पुस्तक का संपादन किया है। इस पुस्तक में जो शोध पत्र

सम्मिलित किए गए हैं, उनमें अधिकांश वर्तमान सशक्तिकरण की स्थिति एवं कमियों से सम्बन्धित हैं एवं कुछ सामाजिक एवं सांस्कृतिक सशक्तिकरण पर केन्द्रित हैं।⁷

बृजमोहन सिंह रावत (2004) ने अपने शोध ग्रन्थ — “नारी समानता तथा सशक्तिकरण” (1990 के दशक में उत्तरांचल के सामाजिक एवं राजनैतिक परिप्रेक्ष्य) में पर्वतीय ग्रामीण महिलाओं की सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक एवं पर्यावरणीय समस्याओं, जागरूकता एवं सशक्तिकरण का विश्लेषण एवं अध्ययन किया। अध्ययन क्षेत्र के रूप में उत्तराखण्ड राज्य के दो जनपद चमोली व बागेश्वर को लिया गया है। दैव निदर्शन विधि द्वारा दोनों जनपदों से तीन-तीन विकासखण्डों तथा प्रत्येक विकासखण्ड से चार-चार गाँवों को चयनित कर चमोली जिले से 330 तथा बागेश्वर जिले से 347 कुल 677 उत्तरदाताओं का चयन किया गया। तथ्य संकलन के लिये साक्षात्कार अनुसूची, सहभागी अवलोकन का प्रयोग किया गया। अध्ययन से निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि महिलाओं में सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक एवं पर्यावरणीय जागरूकता की कमी है, महिलायें अभी सशक्त नहीं हो पायी हैं। अन्त में शोधकर्ता द्वारा महिलाओं की सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक एवं पर्यावरणीय जागरूकता बढ़ाने के लिए सुझाव भी दिये गये हैं।⁸

मानचन्द्र खण्डेला (2008) ने अपनी पुस्तक “महिला सशक्तिकरण : सिद्धान्त एवं व्यवहार” में महिला मुक्ति एवं सशक्तिकरण की अवधारणा, महिला सशक्तिकरण की वास्तविकताओं, महिला हित संरक्षण कानून, महिला आयोग की सशक्तिकरण में भूमिका, कामकाजी महिलाओं में दोहरे दायित्व, देह व्यापार में कारण एवं परिणाम आदि विषयों का वस्तुनिष्ठ एवं विस्तृत विश्लेषण किया है।⁹

अंजली वर्मा (2009) ने अपनी पुस्तक “पंचायती राज व महिला सशक्तिकरण” में महिला सशक्तिकरण को स्पष्ट करते हुए महिलाओं की शिक्षा के बारे में कहा है कि शिक्षा विकास को मापने का एक मुख्य पैमाना है। लेकिन दिल्ली एवं मुम्बई विश्वविद्यालयों के अति आधुनिक छात्राओं की भीड़ से यह नहीं कहा जा सकता है कि भारत में महिला साक्षरता के क्षेत्र में अधिकतम प्रगति हो रही है। उन्होंने अपने अध्ययन में यह भी कहा कि जब तक भारत की ग्रामीण महिलाएँ साक्षर नहीं होंगी तब तक हम भारत को साक्षर भारत की संज्ञा नहीं दे सकते।¹⁰

मंजू शुक्ला (2010) की पुस्तक “महिला साक्षरता एवं सशक्तिकरण” महिला चिन्तन पर आधारित निबंधों का महत्वपूर्ण संग्रह है। इस निबंध संग्रह में महिलाओं की साक्षरता एवं सशक्तिकरण पर विशेष बल दिया गया है। साक्षरता और महिला सशक्तिकरण में आदिवासी दलित एवं पिछड़े वर्ग की महिलाओं के सर्वांगीण विकास पर लेख हैं। निबंध संग्रह में महिला सशक्तिकरण के विभिन्न पहलुओं जैसे— परिवार कल्याण, आर्थिक, सामाजिक स्वावलम्बन कुशल विकास कार्यक्रमों में महिलाओं की भागीदारी कैसे बढ़े एवं साक्षरता आदि शोधपरक निबंध संकलित हैं। इसके साथ ही जनसंख्या, पर्यावरण संरक्षण एवं महिलाओं के लिए शिक्षा की उपयोगिता पर भी दृष्टि डाली गयी है।¹¹

गायत्री देवी (2013) ने अपने शोध ग्रन्थ— “भारत में महिला आर्थिक सशक्तिकरण (मथुरा जनपद के विशेष सन्दर्भ में)” के अध्ययन में महिलाओं के आर्थिक एवं सामाजिक सशक्तिकरण के सम्बन्ध में किये जा रहे प्रयासों की विवेचना की है। अध्ययन क्षेत्र के रूप में उत्तर प्रदेश के मथुरा जनपद में महिलाओं की सामाजिक, आर्थिक, शैक्षिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक, पारिवारिक आदि स्थिति का विस्तृत वर्णन किया गया है, जिसका अधिकांश भाग शोधार्थी द्वारा किये गए स्थलीय सर्वेक्षण से प्राप्त आँकड़ों पर आधारित है। शोध अध्ययन के परीक्षणोपरान्त प्राप्त आँकड़ों व अध्ययन के आधार पर महिला सशक्तिकरण की उपलब्धियों तथा महिला सशक्तिकरण के मार्ग में आने वाली समस्याओं का वर्णन किया गया है, साथ ही उक्त समस्याओं के समाधान के लिए सुझाव भी प्रस्तुत किये गए हैं।¹²

जयप्रकाश (2013) ने अपने शोध ग्रन्थ — “महिला सशक्तिकरण में ग्रामीण विकास योजनाओं की भूमिका” का विश्लेषण किया। अध्ययन का उद्देश्य ग्रामीण विकास योजनाओं की महिला सशक्तिकरण में भूमिका को ज्ञात करना था। प्रस्तुत अध्ययन में वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक शोध प्रविधि का प्रयोग किया गया है। दैव निदर्शन पद्धति का प्रयोग कर 300 उत्तरदाताओं का चयन किया गया है। साक्षात्कार अनुसूची का प्रयोग तथ्य संकलन के लिये किया गया है। अध्ययन से निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि आज महिलाएं हर क्षेत्र में पुरुषों के बराबर हैं। ग्रामीण समाज की महिलाओं में अत्यधिक जागरूकता दिखायी देती है। शासन की योजनाएं, पंचायत राज—व्यवस्था, नगरीय विकास में हर जगह महिलाओं की भागीदारी बढ़ी है लेकिन महिला उत्पीड़न में कोई कमी नहीं आई है। महिलाओं को सशक्त एवं सक्षम बनाने हेतु अन्त में सुझाव भी दिये गये हैं।¹³

नेहा गुप्ता (2017) ने अपने शोध ग्रन्थ— “अनुसूचित जाति की महिलाओं का सशक्तिकरण : ग्रामीण एवं नगरीय महिलाओं का एक तुलनात्मक समाजशास्त्रीय अध्ययन” में महिला सशक्तिकरण हेतु सरकार द्वारा चलाई जा रही योजनाओं का परीक्षण किया। अध्ययन क्षेत्र में उधमसिंह नगर के विकासखण्डों में अनुसूचित जाति की 310 महिलाओं को शामिल किया गया। अध्ययन में यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि सरकारी योजनाओं के माध्यम से महिला सशक्तिकरण में वृद्धि हुई है। नगरीय

महिलाएँ, ग्रामीण महिलाओं की तुलना में अपने अधिकारों की प्राप्ति के लिए अधिक सजग हैं। ग्रामीण महिलाओं के और अधिक सशक्तिकरण के लिए सुझाव भी दिए गए हैं।¹⁴

उपरोक्त सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण करने के उपरान्त यह प्रदर्शित होता है कि महिला सशक्तिकरण के क्षेत्र में विभिन्न सन्दर्भों में कार्य हुए हैं किन्तु दूरस्थ शिक्षा— महिला सशक्तिकरण में किस प्रकार योगदान दे रही हैं, महिलाओं की जागरूकता वृद्धि में दूरस्थ शिक्षा का क्या योगदान है, इस विषय पर शोध कार्य होने से महिला सशक्तिकरण के क्षेत्र में दूरस्थ शिक्षा की भूमिका व उपयोगिता का ज्ञान प्राप्त होगा। दूरस्थ शिक्षा द्वारा महिला सशक्तिकरण विषयक अध्ययन महिला सशक्तिकरण के सन्दर्भ में एवं वर्तमान परिप्रेक्ष्य में अति प्रासंगिक प्रतीत होता है।

अध्ययन के उद्देश्य :-

1. महिला सशक्तिकरण में दूरस्थ शिक्षा की भूमिका व उपयोगिता का अध्ययन करना।
2. उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय से शिक्षा प्राप्ति के पश्चात आयी जागरूकता व परिवर्तन का अध्ययन करना।

शोध पद्धति

प्रस्तुत अध्ययन उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी (नैनीताल) के 12 स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम संचालित महाविद्यालयों में दूरस्थ शिक्षा प्राप्त कर चुकी महिलाओं पर आधारित है। कुल 2047 महिलाओं में से 15 प्रतिशत महिलाओं को लॉटरी पद्धति के माध्यम से चयनित कर उत्तरदाताओं के रूप में सम्मिलित किया गया है, जिनकी संख्या लगभग 300 है। प्रस्तुत अध्ययन में वर्णनात्मक शोध अभिकल्प का प्रयोग किया गया है। प्राथमिक तथ्यों के एकत्रीकरण में साक्षात्कार अनुसूची एवं द्वितीयक तथ्यों का संग्रहण पुस्तकों, शोध पत्रिकाओं, समाचार पत्रों एवं मासिक पत्रिकाओं एवं भारत की जनगणना इत्यादि के माध्यम से किया गया है। तत्पश्चात प्राप्त आँकड़ों का सारणीयन, वर्गीकरण एवं विश्लेषण किया गया है।¹⁵

तालिका संख्या-01

दूरस्थ शिक्षा द्वारा महिला सशक्तिकरण पर उत्तरदाताओं का विवरण

दूरस्थ शिक्षा द्वारा महिला सशक्तिकरण	आवृत्ति	प्रतिशत
हाँ	171	57.00
नहीं	96	32.00
कह नहीं सकते	33	11.00
कुल योग	300	100

उपर्युक्त तालिका 01 से यह ज्ञात होता है कि अधिकांश 57 प्रतिशत उत्तरदाता यह मानते हैं कि दूरस्थ शिक्षा प्राप्त करके महिलाएँ सशक्त हो सकेंगी। महिलाओं को शिक्षित बनाकर उनकी सृजनात्मक क्रियाशीलताओं को प्रबुद्ध, शुद्ध और समुन्नत बनाया जा सकता है। शिक्षा ही महिला को स्वावलम्बी, आत्मनिर्भर, स्वाभिमानी एवं अधिकारों के प्रति जागरूक बना सकती है। जबकि 32 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने इससे इनकार किया है, वहीं 11 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने इस सम्बन्ध में अनभिज्ञता दिखायी है।

तालिका संख्या- 02

दूरस्थ शिक्षा प्राप्त करके महिला जागरूकता में वृद्धि के आधार पर उत्तरदाताओं का विवरण

दूरस्थ शिक्षा द्वारा जागरूकता	आवृत्ति	प्रतिशत
हाँ	180	60.00
नहीं	90	30.00
कह नहीं सकते	30	10.00
कुल योग	300	100

उपर्युक्त तालिका 02 से यह ज्ञात होता है कि 60 प्रतिशत उत्तरदाता यह स्वीकार करते हैं कि दूरस्थ शिक्षा प्राप्त करके महिला जागरूकता में वृद्धि हुई है। जबकि 30 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने इससे इनकार किया है, वहीं 10 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने इस सम्बन्ध में अनभिज्ञता दिखायी है। स्पष्ट है कि अधिकतर उत्तरदाताओं की जागरूकता में वृद्धि हुई है।

तालिका संख्या- 03

दूरस्थ शिक्षा प्राप्त करके रोजगार के अवसरों में वृद्धि के आधार पर उत्तरदाताओं का विवरण

दूरस्थ शिक्षा द्वारा रोजगार के अवसरों में वृद्धि	आवृत्ति	प्रतिशत
हाँ	165	55.00
नहीं	81	27.00
कह नहीं सकते	54	18.00
कुल योग	300	100

उपर्युक्त तालिका 03 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि अधिकांश 55 प्रतिशत महिला उत्तरदाताओं ने माना कि दूरस्थ शिक्षा प्राप्त करके रोजगार के अवसरों में वृद्धि होती है। उदाहरण के तौर पर एम.ए. योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा द्वारा घर में योग केन्द्र चलाया जा सकता है। दूरस्थ शिक्षा द्वारा बी.एड. करके शिक्षण के क्षेत्र में कैरियर बनाया जा सकता है। जबकि 27 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने इससे इनकार किया है, वहीं 18 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने इस सम्बन्ध में अनभिज्ञता दिखायी है। स्पष्ट है कि अधिकांशतः उत्तरदाताओं के रोजगार के अवसरों में वृद्धि हुई है।

तालिका संख्या- 04

दूरस्थ शिक्षा प्राप्त करने के दौरान तकनीकी संसाधनों के उपयोग (कम्प्यूटर एवं मोबाइल) में वृद्धि के आधार पर उत्तरदाताओं का विवरण

दूरस्थ शिक्षा में तकनीकी संसाधनों का उपयोग	आवृत्ति	प्रतिशत
हाँ	201	67.00
नहीं	75	25.00
कह नहीं सकते	24	08.00
कुल योग	300	100

उपर्युक्त तालिका 04 से स्पष्ट होता है कि 67 प्रतिशत उत्तरदाताओं का कहना है कि दूरस्थ शिक्षा प्राप्त करने के दौरान तकनीकी संसाधनों के उपयोग (कम्प्यूटर एवं मोबाइल) में वृद्धि हुई है। दूरस्थ शिक्षा प्राप्त करने में विश्वविद्यालय बेवसाइट एवं इण्टरनेट द्वारा अध्ययन सामग्री प्राप्त की जा सकती है। दत्त कार्य भी बेवसाइट के माध्यम से प्रसारित किये जाते हैं, जिसके कारण दूरस्थ शिक्षा प्राप्त कर रही महिलाओं द्वारा तकनीकी संसाधनों का उपयोग किया गया। जबकि 25 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने इस बात से इनकार किया है, वहीं 08 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने इस सम्बन्ध में अपनी अनभिज्ञता दिखायी है। स्पष्ट है कि अधिकतर उत्तरदाताओं के तकनीकी संसाधनों के उपयोग में वृद्धि हुई है।

तालिका संख्या- 05

दूरस्थ शिक्षा द्वारा आत्मनिर्भरता में वृद्धि के आधार पर उत्तरदाताओं का विवरण

दूरस्थ शिक्षा द्वारा आत्मनिर्भरता	आवृत्ति	प्रतिशत
हाँ	135	45.00
नहीं	90	30.00
कह नहीं सकते	75	25.00
कुल योग	300	100

उपर्युक्त तालिका 05 के अध्ययन से यह ज्ञात होता है कि दूरस्थ शिक्षा प्राप्त करके 45 प्रतिशत उत्तरदाताओं की आत्मनिर्भरता में वृद्धि हुई है। जबकि 30 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने इस सम्बन्ध में इनकार किया है, वहीं 25 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने इस सम्बन्ध में अनभिज्ञता दर्शायी है।

तालिका संख्या- 06**दूरस्थ शिक्षा द्वारा अपने अधिकारों के प्रति जागरुकता में वृद्धि के आधार पर उत्तरदाताओं का विवरण**

दूरस्थ शिक्षा द्वारा अधिकारों के प्रति जागरुकता	आवृत्ति	प्रतिशत
हाँ	168	56.00
नहीं	84	28.00
कह नहीं सकते	48	16.00
कुल योग	300	100

उपर्युक्त तालिका 06 के अध्ययन से ज्ञात होता है कि 56 प्रतिशत महिला उत्तरदाताओं ने स्वीकार किया है कि दूरस्थ शिक्षा प्राप्त करके उन्हें अपने अधिकारों के प्रति जागरुकता में वृद्धि हुई है। जबकि 28 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने अस्वीकार किया है, वहीं 16 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने इस सम्बन्ध में अनभिज्ञता दर्शायी है। स्पष्ट है कि अधिकतर उत्तरदाताओं के अधिकारों के प्रति जागरुकता में वृद्धि हुई है।

तालिका संख्या- 07**दूरस्थ शिक्षा प्राप्त करके परिवार द्वारा सम्मान में वृद्धि के आधार पर उत्तरदाताओं का विवरण**

दूरस्थ शिक्षा द्वारा सम्मान में वृद्धि	आवृत्ति	प्रतिशत
हाँ	177	59.00
नहीं	81	27.00
कह नहीं सकते	42	14.00
कुल योग	300	100

उपर्युक्त तालिका 07 के अध्ययन से ज्ञात होता है कि 59 प्रतिशत महिला उत्तरदाताओं ने स्वीकार किया है कि दूरस्थ शिक्षा प्राप्त करके, परिवार में उनके सम्मान में वृद्धि हुई है। जबकि 27 प्रतिशत महिला उत्तरदाताओं ने इस सम्बन्ध में इनकार किया है, वहीं 14 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने अनभिज्ञता दर्शायी है। स्पष्ट है कि अधिकतर उत्तरदाताओं को परिवार से मिलने वाले सम्मान में वृद्धि हुई है।

तालिका संख्या- 08**दूरस्थ शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात परिवार के मुद्दों पर राय देने के अधिकार में वृद्धि के आधार पर उत्तरदाताओं का विवरण**

राय देने के अधिकार में वृद्धि	आवृत्ति	प्रतिशत
हाँ	156	52.00
नहीं	90	30.00
कह नहीं सकते	54	18.00
कुल योग	300	100

उपर्युक्त तालिका 08 के आधार पर यह कहा जा सकता है कि 52 प्रतिशत महिला उत्तरदाताओं ने यह माना है कि दूरस्थ शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात उनके पारिवारिक मुद्दों पर राय देने के अधिकार में वृद्धि हुई है। जबकि 30 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने इनकार किया है, वहीं 18 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने अनभिज्ञता दर्शायी है। स्पष्ट है कि अधिकतर महिला उत्तरदाताओं के दूरस्थ शिक्षा प्राप्त कर लेने के पश्चात उनके पारिवारिक मुद्दों पर राय देने के अधिकार में वृद्धि हुई है।

निष्कर्ष

उपर्युक्त विवरण के अवलोकन से स्पष्ट है कि दूरस्थ शिक्षा महिला सशक्तिकरण के क्षेत्र में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर रही है। दूरस्थ शिक्षा के द्वारा महिलाओं को समाज में नई पहचान प्राप्त हो रही है। दूरस्थ शिक्षा प्राप्त कर महिलाएँ अपने अधिकारों के प्रति जागरुक हो रही हैं। दूरस्थ शिक्षा प्राप्त करके महिलाओं को रोजगार के नए अवसर प्राप्त

हो रहे हैं, साथ ही साथ दूरस्थ शिक्षा प्राप्ति के दौरान उनके तकनीकी संसाधनों के उपयोग में भी वृद्धि हुई है। आत्मनिर्भरता के क्षेत्र में महिलाओं का प्रतिशत बढ़ रहा है। दूरस्थ शिक्षा प्राप्त करके परिवार में उनके सम्मान में वृद्धि हुई है। वर्तमान में भारतीय महिलाओं में सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, राजनैतिक व धार्मिक सभी क्षेत्रों में परिवर्तन दिखायी दे रहे हैं और इन सब क्षेत्रों में परिवर्तन के लिए शिक्षा महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है।

सन्दर्भ

1. कोठारी, ममता एवं पाण्डेय, रामशकल : शिक्षा और समाज, अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा, 2014 पृ० 09
2. पाठक, पी० डी० : भारतीय शिक्षा और उसकी समस्याएँ, अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा, 2007 पृ० 149,196,215
3. www.censusindia.gov.in, literates and literacy rates by sex ; 2001
4. www.censusindia.gov.in, literates and literacy rates by sex ; 2011
5. सिंह, अमिता : लिंग एवं समाज, विवेक प्रकाशन, दिल्ली, 2017, पृ० 15
6. पाठक, शशिमौल : महिला सशक्तिकरण, (प्राविधान, प्रयास एवं अपेक्षाएँ)—प्रसार प्रशिक्षण केन्द्र, हल्द्वानी (नैनीताल) 2015 पृ० 30,31
7. भट्ट, जयश्री, 1998 : महिलाओं के सशक्तिकरण, अर्जुन पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली।
8. रावत, बृजमोहन सिंह 2004 : नारी समानता एवं सशक्तिकरण — 1990 के दशक में उत्तरांचल के सामाजिक एवं राजनैतिक परिप्रेक्ष्य में एक प्रयास, पीएच०डी० अप्रकाशित शोध ग्रन्थ, हे०न०ब० गढ़वाल विश्वविद्यालय, श्रीनगर (गढ़वाल)।
9. खण्डेला, मानचन्द्र 2008 : महिला सशक्तिकरण : सिद्धान्त एवं व्यवहार, अविष्कार पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, जयपुर (राज०)।
10. अंजली वर्मा, 2009 : “पंचायती राज व महिला सशक्तिकरण” ओमेगा पब्लिकेशन, नई दिल्ली,।
11. शुक्ला, मंजू, 2010 : महिला साक्षरता एवं सशक्तिकरण, भारत प्रकाशन, लखनऊ,।
12. देवी, गायत्री 2013 : भारत में महिला आर्थिक सशक्तिकरण (मथुरा जनपद के विशेष सन्दर्भ में) पीएच० डी० अप्रकाशित शोध ग्रन्थ, डॉ० बी० आर० अम्बेडकर विश्वविद्यालय, मथुरा।
13. जयप्रकाश : महिला सशक्तिकरण में ग्रामीण विकास योजनाओं की भूमिका का विश्लेषण, पीएच०डी० अप्रकाशित शोध ग्रन्थ, पं० रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर, छत्तीसगढ़, 2013।
14. गुप्ता, नेहा 2017 : अनुसूचित जाति की महिलाओं का सशक्तिकरण— ग्रामीण एवं नगरीय महिलाओं का एक तुलनात्मक समाजशास्त्रीय अध्ययन (जिला उधमसिंह नगर की तहसील बाजपुर के विशेष सन्दर्भ में) पीएच० डी० अप्रकाशित शोध ग्रन्थ, कुमाऊँ विश्वविद्यालय, नैनीताल।
15. राय, पारसनाथ : अनुसंधान परिचय, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल प्रकाशन, आगरा, 2017, पृ० 122,123
16. www.uou.ac.in